प्रयोग जो प्रेरणा देते हैं

प्रेरणा सनाढ्य
सहायक अध्यापिका
राजकीय उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय
नाथूवास, खमनोर, राजसमन्द, राजस्थान

प्रधानाध्यापक – **ओमप्रकाश वसीटा**
नामांकन – **248**
मध्याह्न भोजन व्यवस्था – **अक्षय पात्र**

"बच्चों के मन से स्कूल के प्रति भय को निकालना ही मेरा पहला उद्देश्य है।" यह मानना है राजकीय माध्यमिक बालिका विद्यालय, नाथूवास में पर्यावरण शिक्षिका प्रेरणा सनाढ्य का। प्रेरणा जी से मेरी पहली मुलाकात एक फोरम के दौरान हुई जिसके बाद उन्हीं के न्योते पर उनके स्कूल में जाने का अवसर मिला। उस दिन उन्होंने बच्चों के साथ मिलकर झोला पुस्तकालय की एक कहानी का नाटक तैयार किया था। बच्चे एक–एक कर के अपने मन से अपना किरदार चुनते और अपनी पसंदीदा कहानी 'सो जाओ टिंकू' का नाटकीकरण करते। इसके बाद प्रेरणा जी ने हमें उनके और बच्चों के द्वारा बनाए गए टी.एल.एम. दिखाए। इस एक मुलाकात के बाद प्रेरणा जी से मिलने के कई अवसर मिले और उनके काम के प्रति मेरी सराहना बढ़ती गयी।

प्रेरणा जी ने बतौर शिक्षिका अपना सफर 1999 में संस्कृत की शिक्षिका के तौर पर शुरू किआ। तभी से वे हिंदी की मास्टर ट्रेनर (MT) भी रही हैं। नाथूवास में वे 2016 से पर्यावरण की शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं। पर उनका कार्य केवल पर्यावरण पढ़ाने तक ही सीमित नहीं है, वे हिंदी विषय भी पढ़ाती हैं। कुछ बच्चे तीसरी कक्षा में आने के बाद भी पढ़ना–लिखना नहीं जानते थे जिसकी वजह से उन्हें पर्यावरण पढ़ने में भी मुश्किल का सामना करना पड़ता था। इसीलिए उन्होंने बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने पर भी ध्यान देना शुरू किया। पर चुनौती उनके सामने यह भी थी कि बच्चों का स्कूल में ठहराव नहीं था। भय के कारण बच्चे स्कूल में आने से कतराते थे। कभी वर्दी न होने का भय तो कभी पढ़ना न आने पर कॉपी में काम न पूरा होने का भय। वहीं कुछ बच्चे घर की परेशानियों के चलते स्कूल नहीं आ पाते थे।

अनियमित रहने की वजह से भी वे पढ़ने–लिखने में बाकी बच्चों से पीछे रह जाते थे। प्रेरणा जी ने बच्चों का स्कूल में ठहराव सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करना शुरू किया। जो बच्चे भय के कारण नहीं आ पाते थे, उनसे बातचीत कर उन्हें सहज करने का प्रयास किया ताकि वे बिना डरे स्कूल आ पाएं। वहीं जो बच्चे घर की परेशानियों, जैसे– छोटे भाई–बहनों की जिम्मेदारी के चलते स्कूल नहीं आ पाते थे, उन्हें भी किसी तरह स्कूल लाने का प्रयास किया। अब बच्चे नियमित रूप से स्कूल आने लगे हैं। तीसरी कक्षा के दो बच्चे मुकेश और प्रकाश की अटेंडेंस दिखाते हुए वे बताती हैं के ये दोनों बच्चे जबसे स्कूल शुरू हुआ तबसे ही लगातार अनुपस्थित रहते थे। जहां मुकेश वर्दी न होने के कारण तो प्रकाश माता–पिता के बीमार होने के चलते अपनी छोटी बहनों की जिम्मेदारी की वजह से स्कूल नहीं आ पा रहा था। प्रेरणा जी उनके घर गईं तो उन्हें ये सब मालूम हुआ। उन्होंने जहां मुकेश को स्कूल में एक शिक्षिका द्वारा लाई गई वर्दी देकर उसे आश्वासन दिया कि उसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है वहीं प्रकाश को अपनी बहनों के साथ स्कूल आने को कहा। जब प्रकाश कक्षा में होता है तब उसकी बहनें आंगनबाड़ी में रहती हैं। अक्टूबर से इन दोनों बच्चों की नियमितता स्कूल में बढ़ी है। प्रेरणा जी बच्चों के अभिभावकों से भी मिलने का प्रयास करती हैं खासकर उन अभिभावकों से जिनके बच्चे अनियमित रूप से स्कूल आते हैं, जिससे बच्चों की नियमितता सुनिश्चित की जा सके। वे मानती हैं कि बच्चों के सामाजिक परिवेश का उनकी मनः स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है जिसका सीधा असर उनकी सीखने की प्रक्रिया पर भी दिखाई देता

है जिसका ध्यान हमें बतौर शिक्षक होना चाहिए।

बच्चों का उनकी प्रेरणा मैम के साथ तालमेल सराहनीय है। बच्चे उनके साथ सहज तो हैं ही, बिना भय के अपनी बात रख भी पाते हैं। प्रेरणा जी मानती हैं कि हर बच्चे की क्षमताएं अलग होती हैं तो यह मान लेना कि सिखाने का तरीका भी एक ही हो यह गलत है। वे अपने अध्यापन में सीखने–सिखाने के विभिन्न तरीकों को शामिल करती हैं जिनमें कहानियां, आर्ट एंड क्राफ्ट, चित्र बनाना, नाटक, आदि शामिल हैं। वे कोशिश करती हैं कि पर्यावरण इस तरह पढ़ाएं कि बच्चे साथ–साथ पढ़ना लिखना तो सीखें ही साथ ही में उनकी मौखिक अभिव्यक्ति का भी विकास हो। वे नियमित रूप से पाठ्य योजना बनाती हैं और अपनी बनाई गयी योजना पर दूसरों की राय भी लेती हैं ताकि वे अपनी योजना को और बेहतर बना पाएं।

किताबों और कहानियों द्वारा शिक्षण

प्रेरणा जी झोला पुस्तकालय में सम्मिलित विभिन्न किताबों का इस्तेमाल कक्षा में बच्चों को पढ़ाने के लिए करती रहीं हैं। कभी किताब में से कहानी पढ़कर बच्चों को सुनातीं, कभी उनको पढ़ने को देती हैं, तो कभी उसका नाटय रूपांतर कराती हैं। पर्यावरण पढ़ाने में किताबें बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे कहती हैं कि किताबों के जरिए वे पर्यावरण में आने वाले विषय जैसे जल, जानवर, पक्षी, मौसम आदि पर भी काम कर पाती हैं। झोला पुस्तकालय उनके पास आने से पहले भी वे अपने बच्चों की पुरानी किताबें स्कूल ले आया करती थीं और उनको अपने अध्यापन में शामिल करती थीं। बच्चे भी किताबों से काफी जल्दी जुड़ जाते हैं। कभी वे अपनी पसंदीदा कहानी पढ़ते हैं, कभी किताबों से देखकर अपने पसंदीदा किरदार का चित्र बनाते हैं तो कभी मुखौटे बनाकर नाटक प्रस्तुत करते हैं। इस तरह किताबें उनकी पाठयचर्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

पढ़ना–लिखना सीखने का प्रयास

प्रेरणा जी बच्चों में पढ़ने लिखने का कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न प्रयास करती आई हैं। पिछली दिवाली की छुट्टियों के दौरान उन्होंने भाषा सिखाने के लिए एक 8 दिवसीय कैम्प का आयोजन किया जिसमें विशेष रूप से उन बच्चों को शामिल किया जो पढ़ना–लिखना नहीं जानते थे। कैम्प के दौरान उन्होंने किताबों, फ्लैश कार्ड्स, चार्ट्स आदि टी.एल.एम. का उपयोग कर बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने का प्रयास किया। जहाँ छुट्टियों में बच्चों का स्कूल आना सुनिश्चित

करना एक कठिन कार्य है वहां पहले ही दिन 18 बच्चे कैंप में आए जिनकी संख्या अगले दिन 30 हो गयी और ये संख्या अंत तक बनी भी रही। कैम्प में बच्चों के साथ जो काम हुआ उसका प्रतिफल ये रहा कि कुछ बच्चे पढ़ने–लिखने की ओर बढ़ पाए।

इस सत्र में तीसरी से पांचवी कक्षा तक करीब तीस बच्चे ऐसे थे जो पढ़ना–लिखना नहीं जानते थे जिनके साथ सितम्बर से शिक्षिका के प्रयास जारी हैं। अब कईं बच्चे पढ़ना–लिखना सीख गए हैं और बाकी सरल शब्दों को पढ़ना–लिखना सीखने लगे हैं। अब उन्होंने बी.एड की ट्रेनिंग लेने वाली एक शिक्षिका के साथ तालमेल बैठा कर बच्चों के पढ़ने–लिखने पर अतिरिक्त काम करना शुरू किया है जिससे उन्हें भी थोड़ी आसानी होने लगी है। वे जब खुद कक्षा में काम नहीं कर पातीं तो नीता मैम के साथ तालमेल बैठाकर ये सुनिश्चित करती हैं कि बच्चों के साथ नियमित रूप से काम हो पाए।

कम्प्यूटर तकनीक और टी.एल.एम. का उपयोग

प्रेरणा जी चित्र, फ्लैश कार्ड्स, मास्क, कार्यपत्रक, किताबें, चार्ट्स आदि जैसे टी.एल.एम. का उपयोग तो करती ही रहीं हैं, साथ ही उन्होंने आई.सी.टी. को भी अपनी पाठयचर्या हिस्सा बनाया है। वे समय–समय पर प्रोजेक्टर का इस्तेमाल कर बच्चों को अलग–अलग वीडियो दिखाती हैं जिनमें कहानी, कविताएं आदि शामिल हैं। उनके अनुसार बच्चों की रुचि वीडियो देखने में ज्यादा रहती है जिसकी मदद से वे कक्षा में विभिन्न विषयों पर काम कर सकती हैं। पहले वे प्रोजेक्टर के उपयोग के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की सहायता लेती थीं। अब स्कूल में सरकार द्वारा प्रोजेक्टर व कुछ कंप्यूटर लगाए गए हैं जिसके चलते उन्हें काफी सुविधा महसूस हो रही है।

प्रेरणा जी बच्चों के लिए विभिन्न पाठ्य सामग्री बनाती हैं और बच्चों से बनवाती भी रहती हैं जिससे बच्चों की रूचि पढ़ने में बनी रहे। उन्होंने शादी के कार्ड्स का उपयोग कर फ्लैश कार्ड्स बनाए जो स्थाई रहें और बार–बार उपयोग किए जा सकें। वे समय–समय पर किताब पढ़ कर बच्चों के कार्यपत्रक बनाती हैं तथा पढ़ाने के नए तरीकों की खोज में रहती हैं। एक शिक्षिका के रूप में प्रेरणा जी एक अच्छे उदाहरण के रूप में हमें नजर आती हैं जिनका मूल उद्देश्य है बच्चों की सीखने में मदद करना। उनके निरन्तर प्रयासों का बच्चों के सीखने पर भी प्रभाव दिखता है। उनके शिष्य आत्मविश्वास, अनुशासन तथा मौखिक अभिव्यक्ति से परिपूर्ण नजर आते हैं।

'प्रेरणा जी एक अच्छी शिक्षिका हैं, जो बच्चों के साथ जुड़कर उनके परिवेश को ध्यान में रखते हुए पढ़ाती हैं। समय का पालन करना उनके स्वभाव में है। वे स्कूल में मौजूद सामग्री का उपयोग तो करती हैं ही, साथ ही अपने घर से अतिरिक्त किताबें व सामग्री लाकर भी अपनी कक्षा में प्रयोग करती हैं। उनके प्रयास से बच्चे भी सीख रहे हैं।'

– ओमप्रकाश वसीटा

(प्रेरणा सनाढ्य की गरिमा शर्मा की हुई बातचीत पर आधारित)